नवभारत
संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

धार से निकला विकसित भारत का संदेश

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का जीवन किसी सामान्य राजनीतिक यात्रा की कहानी नहीं है. संगठनकर्ता से लेकर गुजरात के सफल मुख्यमंत्री और अब लगातार तीसरी बार देश के प्रधानमंत्री–हर पड़ाव पर उन्होंने भारत की राजनीति और प्रशासन को नई दिशा दी है. उनके नेतृत्व में भारत ने न केवल वैश्विक मंच पर अपनी पहचान मजबूत की है बल्कि आत्मनिर्भरता और विकास के नए आयाम भी गढ़े हैं. प्रधानमंत्री मोदी का राजनीतिक दर्शन हमेशा से स्पष्ट रहा है- गरीबों, किसानों, महिलाओं और युवाओं को राष्ट्र की प्रगति का आधार बनाना. यही दृष्टिकोण धार जिले के भैंसोला गांव में उनकी मौजूदगी में एक बार फिर परिलक्षित हुआ, जब बुधवार को उन्होंने देश के पहले पीएम मित्र पार्क का शिलान्यास किया. यह परियोजना केवल उद्योगों तक सीमित नहीं है, बल्कि कपास उत्पादक किसानों और ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए सुनहरा भविष्य गढ़ने का संकल्प है. 2158 एकड़ में फैले इस पार्क से तीन लाख रोजगार सृजित होंगे और छह लाख किसान सीधे लाभान्वित होंगे. धार, जो पहले सिर्फ कपास की पैदावार के लिए जाना जाता था, अब 'कॉटन कैपिटल' बनने की ओर अग्रसर है. प्रधानमंत्री मोदी के भाषण में उनके राष्ट्रवादी और जनकल्याणकारी दृष्टिकोण की झलक साफ दिखाई दी. उन्होंने महाराजा भोज, महर्षि दधीचि और सरदार पटेल का स्मरण करके भारतीय परंपरा और त्याग की चेतना को वर्तमान संदर्भों से जोड़ा. पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद पर उनका दोटूक रुख, हैदराबाद मुक्ति दिवस का स्मरण और 'घर में घुसकर मारने' की नीति–यह सब उनके 'नए भारत' की परिभाषा को सशक्त करते हैं.

महिला सशक्तिकरण मोदी सरकार की एक विशेष पहचान है. धार से उन्होंने 'स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार' अभियान का शुभारंभ करते हुए मातृशक्ति के स्वास्थ्य और गरिमा को केंद्र में रखा. बीपी, मधुमेह, कैंसर जैसी बीमारियों की मुफ्त जांच और दवा–यह कदम ग्रामीण और पिछड़े इलाकों में स्वास्थ्य सुरक्षा की क्रांति साबित हो सकता है. उनकी अपील 'एक बेटे और भाई के नाते' सीधे जनमानस के हृदय तक पहुंचती है. यही वह शैली है, जिसने मोदी को करोड़ों भारतीयों के बीच आत्मीय नेता बनाया.पिछले 11 वर्षों में गरीब कल्याण योजनाओं का जो विस्तार हुआ, वह अपने आप में ऐतिहासिक है. उज्ज्वला, आयुष्मान, आवास, मुफ्त अनाज योजना और मुद्रा योजना ने गरीब परिवारों को जीवन की बुनियादी सुरक्षा दी. महिलाओं को बैंक सखी, ड्रोन दीदी और लखपति दीदी बनाकर उन्हें ग्रामीण अर्थव्यवस्था के केंद्र में स्थापित करना, मोदी की दीर्घकालिक सोच का प्रमाण है.

धार की धरती से प्रधानमंत्री ने एक और महत्वपूर्ण संदेश दिया–स्वदेशी अपनाओ. त्योहारी मौसम में उनकी अपील कि दुकानों पर लिखा हो 'गर्व से कहो ये स्वदेशी है' केवल भावनात्मक आग्रह नहीं, बल्कि 2047 तक विकसित भारत की ठोस रणनीति है. जब हर भारतीय 'मेक इन इंडिया' उत्पाद खरीदेगा, तभी आत्मनिर्भर भारत वैश्विक प्रतिस्पर्धा में अग्रणी बन पाएगा.

प्रधानमंत्री मोदी के मन में मध्य प्रदेश के लिए विशेष स्थान है. चाहे शहडोल से सिकल सेल अभियान की शुरुआत हो या अब धार में मित्र पार्क की नींव–वे बार-बार इस राज्य को राष्ट्रीय विकास की धुरी बनाने की दिशा में कदम बढ़ाते रहे हैं. मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में यह विश्वास और मजबूत हुआ है. बुधवार को जब प्रधानमंत्री ने अपने जीवन के 75 वर्ष पूर्ण किए , तो यह अवसर केवल एक नेता के जन्मदिन का नहीं, बल्कि उनके विजन के साथ एक नए भारत की प्रतिज्ञा का है. धार से उठी यह गूंज-'फार्म से फैशन और फैक्ट्री से फॉरेन तक'- भारत की आत्मनिर्भरता और वैश्विक नेतृत्व की यात्रा का मार्ग प्रशस्त करती है.

मोदी का ट्रैम्पोलिन

क्या हम छलांग लगा पाएंगे?

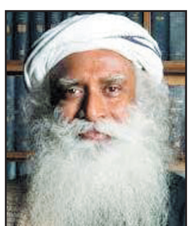

सद्गुरु जग्गी वासुदेव

> भारत में न केवल अपने सच्चे गौरव के युग में प्रवेश करने की क्षमता है, बल्कि मानवता को उस युग में ले जाने की भी क्षमता है. हमारे पास एक योग्य, साहसी और निस्वार्थ व्यक्ति है, लेकिन हमें याद रखना चाहिए कि राष्ट्र केवल ज़मीन का एक टुकड़ा नहीं, बल्कि वहां रहने वाले लोग ही उसका असली रूप होते हैं. यह भारत के नागरिकों पर निर्भर है कि वे सुशासन और अवसर के मंच का उपयोग करके अपने इच्छित स्वर्णिम भविष्य का निर्माण करें. आइए, इसे साकार करें!

पिछली शताब्दियों में मानवता ने जो चुनाव किए हैं, वे हमें संकट की कगार पर लेकर आए हैं. जिस तरह से हमने अपनी अर्थव्यवस्थाओं, अपने पर्यावरण और पारिस्थितिकी, अपनी शिक्षा और सामाजिक व्यवस्था, अपने युवाओं और अगली पीढ़ी के पालन-पोषण को संभाला है, उसने हमें हमें इस अस्थिर स्थिति तक पहुंचा दिया और दुनिया को संकट की दहलीज पर ला खड़ा किया है. आज अलग-अलग जगहों पर युद्ध, अस्थिर आर्थिक ढांचे, तेज़ी से बिगड़ती पारिस्थितिकी और बढ़ती प्राकृतिक आपदाएं, मानसिक स्वास्थ्य महामारी और नशे की लत जैसी समस्याएं, ये सब इसके प्रमाण हैं.

इसका मतलब विनाश और निराशा की तस्वीर पेश करना नहीं है. बदलाव की स्थिति, दरअसल संभावनाओं की स्थिति होती है. आज जो फैसले हम करेंगे, वे हमें या तो बड़े परिवर्तन की ओर ले जा सकते हैं या फिर पतन की ओर धकेल सकते हैं. 8.5 अरब की आबादी के साथ हम एक भारी-भरकम मानव जाति हैं, लेकिन अभी तक उस चेतना के स्तर तक नहीं पहुंचे हैं, जहां हम एकजुट होकर सामूहिक निर्णय ले सकें. हम सरकारों, क़ानूनों और नेतृत्व पर भरोसा करते हैं कि वे पूरी दुनिया को दिशा दें. ऐसे समय में यह बहुत अहम है कि हम अपने लिए किस तरह का नेतृत्व चुनते हैं. अगर हम पृथ्वी का एक टिकाऊ और सुंदर भविष्य चाहते हैं, तो हमें %वसुधैव कुटुम्बकम% के आदर्श को सही मायने में अपनाना होगा. यह उपयुक्त है कि भारत, जिसने हमेशा सबको जोड़कर रखने की भावना को महत्व दिया है, ने नरेंद्र मोदी जैसे नेता को चुना है, जो इन मूल्यों को गहराई से मानते हैं. कई मायनों में भारत ने ऐसा नेतृत्व सामने रखा है जो उसकी आत्मा, उसकी संस्कृति और संस्कारों से मेल खाता है. यह बहुत ज़रूरी है. सिर्फ इसलिए नहीं कि समावेशिता सही रास्ता लगती है, बल्कि इसलिए कि आने वाले समय में समावेशिता ही एकमात्र रास्ता है.

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने बार-बार दुनिया के सामने एक अधिक समावेशी और सहयोगी मानवता का रास्ता दिखाया है. अफ़्रीकन यूनियन को G20 में शामिल कराने की पहल हो, ग्लोबल साउथ के नेतृत्व की भूमिका, वन वर्ल्ड, वन सन, वन ग्रिड जैसी विशाल नवीकरणीय ऊर्जा योजना, पड़ोसी देशों को प्राथमिकता देने की नीति, संकट के समय सबसे पहले मदद पहुंचाने वाला देश बनना, या फिर महामारी के दौरान 96 देशों को मानवीय सहायता देना, इन सबमें भारत ने यह साबित किया है कि असली मायने काम में होते हैं, और हम छोटे-छोटे निजी लाभ की अपेक्षा मानवता को अधिक महत्व देते हैं.

समावेशिता का यह गुण नरेंद्र भाई की नेतृत्व शैली में भी स्पष्ट दिखाई देता है. मन की बात पहल शासन की विशाल व्यवस्था में भले ही एक छोटा हिस्सा लगे, लेकिन इसका संदेश गहरा है. आम नागरिक से सीधा संवाद करके वे उनकी कहानियों, संघर्षों और योगदान को पहचानते और सम्मानित करते हैं. यही जुड़ाव उन्हें ज़मीन से जोड़े रखता है और यह सुनिश्चित करता है कि उनकी नीतियां जनता की वास्तविक आवश्यकताओं के अनुरूप हों. मैं योग को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने में उनकी भूमिका की गहराई से सराहना करता हूं. अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की घोषणा करवा कर उन्होंने योग के प्रति दुनिया में अद्भुत रुचि जगाई है और यह बताया है कि योग मनुष्य के जीवन में कितनी भलाई ला सकता है. आज के समय में यह और भी जरूरी है, क्योंकि योग की विधियां मानसिक और शारीरिक चुनौतियों से निपटने का सबसे असरदार उपाय हैं. हर इंसान के लिए यह आवश्यक है कि वह रोज़ कम से कम कुछ मिनट योग या ध्यान को अपनाए, ताकि अपने भीतर स्थिरता और विकास का मजबूत आधार बना सके.

भारत का सभ्यता-राज्य आज एक ऐसे मोड़ पर खड़ा है जहां से वह अपनी असली क्षमता को पहचानकर एक गौरवशाली भविष्य की ओर बढ़ सकता है. अब तक हमने अपनी आर्थिक प्रगति में अभूतपूर्व कार्य और प्रगति देखी है, बुनियादी ढाँचे, अंतरिक्ष, रक्षा, कृषि और प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में तेजी देखी है. साथ ही, हम आत्मनिर्भरता, भू-राजनीतिक लचीलेपन और शक्ति की दिशा में अपनी नीतियों के कुशल संचालन के भी साक्षी रहे हैं. हालांकि, एक राष्ट्र के रूप में हमें अभी भी बहुत कुछ करना है. आने वाली पीढ़ी का सही मार्गदर्शन और पोषण हमारे विकास की कुंजी है. हम नहीं चाहते कि भारत की बढ़ती युवा आबादी इस सुनहरे अवसर को खो दे.

शंकर शाह रघुनाथ शाह के बलिदान दिवस पर शत शत नमन...

ये सच है हिंदुस्तान आज ज़िंदा उनकी कुरबानी पर

डॉ. विनोद कुमार मिश्रा

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम केवल राजनीतिक घटनाओं का सिलसिला भर नहीं था, बल्कि यह भारत की सामूहिक चेतना का वह महाआंदोलन था, जिसमें हर वर्ग, हर जाति, हर क्षेत्र और हर समुदाय ने अपनी-अपनी तरह से योगदान दिया. अक्सर जब हम 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की चर्चा करते हैं, तो दिल्ली, झांसी, कानपुर, लखनऊ और ग्वालियर जैसे बड़े केंद्रों पर ध्यान केंद्रित करते हैं. लेकिन अगर हम गहराई से देखें तो पाएंगे कि इस आंदोलन की जड़ें भारत के सुदूरवर्ती अंचलों तक फैली हुई थीं. मध्यप्रदेश का जबलपुर और मंडला क्षेत्र इसका एक जीवंत उदाहरण है. यहाँ की जनता, विशेषकर गाँड समाज, स्वतंत्रता और स्वाभिमान के प्रति अत्यंत सजग रही है. यही कारण है कि 1857 के समय जब पूरा देश आंदोलन की आग में जल रहा था, तब इस क्षेत्र ने भी अपने वीरों को जन्म दिया, जिन्होंने न केवल अंग्रेज़ी सत्ता को चुनौती दी बल्कि अपने प्राणों की आहुति देकर इतिहास में अमर हो गए.

शंकर शाह और रघुनाथ शाह की गाथा इसी पृष्ठभूमि से जुड़ी हुई है. वे केवल गढ़ा-मंडला राज्य के शाही परिवार से जुड़े होने के कारण ही महत्त्वपूर्ण नहीं थे, बल्कि इसलिए भी क्योंकि उन्होंने जनता की आवाज़ को शब्द और स्वर दिया. शंकर शाह कवि थे लेकिन उनकी कविताएँ महज़ मनोरंजन के लिए नहीं थीं, बल्कि उनमें स्वतंत्रता की पुकार थी, उनमें मातृभूमि की वेदना थी और उनमें उस ज्वाला का स्वरूप था जिसने आम आदमी के दिल को आंदोलित कर दिया. उनके पुत्र रघुनाथ शाह ने उस भावना को संगठित रूप दिया. इस तरह पिता और पुत्र दोनों ने मिलकर स्वतंत्रता संग्राम को मध्यप्रदेश की धरती पर एक नई ऊँचाई प्रदान की. उनका बलिदान यह साबित करता है कि स्वतंत्रता संग्राम कोई एक-दो व्यक्तियों का आंदोलन नहीं था, न ही यह केवल किसी विशेष वर्ग या क्षेत्र की आकांक्षा थी. यह पूरे भारतीय समाज का साझा सपना था, जिसमें कवि भी शामिल थे, योद्धा भी शामिल थे, किसान भी शामिल थे और आदिवासी समाज भी. इसी साझा भावना ने अंग्रेज़ों की सत्ता की नींव को हिलाकर रख दिया और भारत को अंततः स्वतंत्रता की ओर अग्रसर किया. गोंडवाना का इतिहास भारतीय उपमहा?द्वीप की सबसे महत्वपूर्ण गाथाओं में से एक है, जिसे अक्सर मुख्यधारा के इतिहासकारों ने उपेक्षित किया. गाँड समाज आदिकाल से इस भूभाग पर बसा हुआ है और उसने अपनी संस्कृति, परंपराओं और सामाजिक संगठन को बनाए रखा. गोंडों की विशेषता यह थी कि वे प्रकृति से गहरे जुड़े हुए थे. उनका जीवन जंगलों, नदियों और पहाड़ों से गुँथा हुआ था. गोंड चित्रकला, संगीत और लोकगीत आज भी उनकी सांस्कृतिक समृद्धि का प्रमाण हैं. गढ़ा-मंडला राज्य की स्थापना ने गोंड समाज को राजनीतिक स्वरूप दिया. 14वीं शताब्दी से लेकर 16वीं शताब्दी तक यह राज्य निरंतर प्रगति करता रहा. इसकी राजधानी पहले सिंगौरगढ़ और बाद में जबलपुर बनी. यह राज्य अपने संगठन और शासन व्यवस्था के लिए प्रसिद्ध था. गढ़ा-मंडला राज्य की सबसे प्रसिद्ध शासक रानी दुर्गावती थीं. उन्होंने न केवल प्रशासनिक कुशलता दिखाई बल्कि जब मुग़ल आक्रमण हुआ तो उन्होंने अदम्य साहस और पराक्रम का प्रदर्शन किया.

रानी दुर्गावती का बलिदान भारतीय इतिहास में अमर है. उन्होंने जीवन के बजाय सम्मान को प्राथमिकता दी. जब उन्हें लगा कि पराजय निश्चित है, तब उन्होंने आत्मबलिदान किया, लेकिन हार नहीं मानी. उनका यह आदर्श गाँड समाज की नस-नस में बस गया. यह परंपरा पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रही और शंकर शाह तथा रघुनाथ शाह तक पहुँची. जब मुगल और मराठा शक्ति का पतन हुआ, तब अंग्रेजों ने धीरे-धीरे गोंडवाना क्षेत्र को अपने नियंत्रण में ले लिया. शंकर शाह को अंग्रेजों ने सत्ता से वंचित कर केवल पेंशन पर निर्भर बना दिया. लेकिन यह पराजय नहीं थी. उनके भीतर जो आत्मगौरव और स्वाभिमान की ज्वाला थी, वह किसी भी परिस्थिति में बुझने वाली नहीं थी. यही ज्वाला आगे चलकर अंग्रेज़ों के विरुद्ध उनके विद्रोह का कारण बनी.

अंग्रेज़ों ने भारत में केवल सत्ता स्थापित नहीं की, बल्कि उन्होंने जनता के जीवन के हर पहलू को प्रभावित किया. उनकी आर्थिक नीतियों ने किसानों, कारीगरों और आदिवासियों को तबाह कर दिया. सबसे पहले कृषि क्षेत्र पर करों का बोझ बढ़ा दिया गया. किसानों से इतना लगान वसूला जाता था कि वे कर्ज में डूबते चले गए. अकाल और प्राकृतिक आपदाओं के समय भी उन्हें कोई राहत नहीं दी जाती थी. आदिवासी समाज, जो जंगलों और प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर था, सबसे अधिक प्रभावित हुआ. अंग्रेज़ों ने वन कानून लागू करके उनके पारंपरिक अधिकार छीन लिए.

लेखक- कुलगुरु रानी अवंतीबाई लोधी राजकीय विश्वविद्यालय सागर (म.प्र.)

भारत के साथ डबल गेम खेल रहे ट्रंप

अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप भारत को पुचकारकर और जी-6 देशों को हमारे खिलाफ बड़े टैरिफ लगाने के लिए उकसाकर डबल गेम खेल रहे हैं. ट्रंप चाहते हैं कि भारत, अमेरिका का रक्षा व सुरक्षा में साझेदार बने ताकि चीन पर अंकुश लग सके और इसके लिए अमेरिका के हिस्से की बड़ी लड़ाई भारत अपने भूगोल में रहने के दौरान ही चीन से लड़ ले. ट्रंप चाहते हैं भारत अपना बाजार खोल दे, ताकि अमेरिका की कंपनियों को सीधा-सीधा फायदा हो. लेकिन इस सबके लिए वह भारत के किसी भी किस्म के हित की नहीं सोच रहे. यहां तक कि अमेरिका यह भी चाहता है कि विदेशनीति के मामले में भारत, अमेरिका के पाले में रहे. जिसे रूस और चीन प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष दुश्मन या गैर भरोसेमंद दोस्त समझे. वास्तव में ट्रंप की यह होशियारी इतनी एकतरफा और सरेआम है कि कोई भी देश उनकी इस तरह की हरकतों से पलटकर जवाब दे सकता है. बशर्ते उसमें रीढ़ की हड्डी हो और संयोग से भारत वह देश है, जो भले गैरजरूरी जवाबदारी से कतराता हो, लेकिन अपने व्यवहार से जता देता है कि वह किसी और के इशारे पर नाचने वाला नहीं है. ट्रंप अभी तक यही करते रहे हैं. वह जिस भी देश को झुकाने की कोशिश करते हैं, उसे पहले गाजर दिखाते हैं, फिर उस पर डंडा चलाते हैं. भारत से मीठी बातें करना, उनकी रणनीति है ताकि भारत का उन पर भरोसा बना रहे और कठोर दबाव डालना उनकी शैली है, ताकि भारत झुकने के लिए मजबूर हो जाए. लेकिन उनकी यह रणनीति कम से कम भारत के संदर्भ में तो नहीं चलने वाली. आज दुनिया में कोई भी देश इस सोच के साथ कि भारत को साथ भी रखो और हर सौदे में उसे जमकर निचोड़ो, इस मंशा से भारत के साथ न भरोसा कायम कर सकता है, न दोस्ती और न किसी तरह की साझेदारी. इसलिए ट्रंप को भी ऐसा कोई फायदा नहीं होने वाला. लेकिन ट्रंप को यह समझ में आए, इसके लिए भारत को रणनीतिक तौर पर सावधान रहने की जरूरत है.

आज दुनिया में कोई भी देश इस सोच के साथ कि भारत को साथ भी रखो और हर सौदे में उसे जमकर निचोड़ो, इस मंशा से भारत के साथ न भरोसा कायम कर सकता है, न दोस्ती और न किसी तरह की साझेदारी!

- डॉ. अनिता राठौर

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

हर किसी के अपने सरोकार सभी का अपना-अपना परिवार

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, आज की शहरी संस्कृति में परिवार टूटते-बिखरते जा रहे हैं. केवल हमारे नेता परिवारवाद का अच्छी तरह से ध्यान रख रहे हैं. परिवार है तो समाज है और समाज है तो देश है. हमारी उदारतापूर्ण सोच रही है- वसुधैव कुटुंबकम ! समूची पृथ्वी एक परिवार है, इसीलिए विदेशी घुसपैठिए भी यहां आकर वोटर बन जाते हैं. मतदाता सूची के गहन पुनरीक्षण या एसआईआर से यह फालतू का कचरा बाहर किया जा रहा है.

हमने कहा, आपकी अटपटी बातों में कोई तारतम्य नहीं है. पुराने बड़े संयुक्त परिवारों में बच्चे, बूढ़े, चाचा, ताऊ, उनके बेटे, बहुएं मिलाकर 25-30 लोगों का कुटुंब एक छत के नीचे रहा करता था. हर साल-दो साल में नया मेहमान जन्म लेता था और पालना हिला करता था. अतिथि आकर टिक जाते थे और महीने भर से ज्यादा रहा करते थे. कुछ दूर के रिश्तेदार भी परिवार में मुंहबोले रिश्ते से डेरा जमा लेते थे. खेती का अनाज आने से खाने की कमी नहीं पड़ती थी. मेहनती और निकम्मे, कमाने वाले और बेकार चुनापी सभी तरह के लोग परिवार में खप जाते थे. कृषिप्रधान अर्थव्यवस्था में घर का एक मुखिया रहता था. उसी का आदेश सभी पर चलता था. बड़ा परिवार होने से सुरक्षा गार्ड की जरूरत नहीं पड़ती थी. किसी से झगड़ा हुआ तो पूरा परिवार लाठी-डंडा लेकर उतर आता था.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, हमने जैमिनी पिक्चर्स और एवीएम की पुरानी ब्लैक एंड व्हाइट फिल्मों में ऐसी बड़ी जॉइंट फैमिली देखी है, जिसमें लोग किसी गलतफहमी की वजह से लड़-झगड़ कर अलग हो जाते थे, लेकिन फिल्म के अंत में सभी एकजुट होकर ग्रुप फोटो खिंचवाते थे.

हमने कहा, अब परिवार की परिभाषा पूरी तरह बदल गई है. फैमिली का मतलब पति-पत्नी और 2 बच्चे रह गया है. परिवार छोटा और जरूरतें बड़ी हो गई हैं. लोग मजबूत आर्थिक आधार और बेहतर जीवन स्तर हासिल करने के लिए देर से शादी करते हैं. बुजुर्गों की दादागिरी का जमाना बीत गया. नई पीढ़ी खूब कमाती और खुलकर खर्च करती है. जो बुजुर्ग बदली हुई परिस्थिति में खुद को एडजस्ट कर लेते हैं, वह सुखी रहते हैं. पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, एडजस्टमेंट कहां नहीं है! प्रधानमंत्री मोदी ने भी तो नीतीशकुमार और चंद्राबाबू नायडू की पार्टियों को अपने गठबंधन में समायोजित किया है ताकि विपक्षी गठबंधन इंडिया के सामने एनडीए अच्छी तरह डांडिया खेल सके. याद रखिए प्रधानमंत्री ने एक बार कहा था कि मेरा कोई अपना परिवार नहीं है, सारे 140 करोड़ भारतवासी मेरा परिवार हैं.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12025 - डॉ. सागर खादीवाला

बाएं से दाएं
1. लंबी गोल फलियों वाला एक पेड़ जिसके फूल, फल, बीज दवा के काम आते हैं 5. विवाह 7. प्रथम, जो गणना या क्रम में एक के स्थान पर पड़े 8. वह राजकीय या विभागीय स्थान जहां माल जमा रहता है 9. एक प्रकार का वृक्ष या इस वृक्ष का निर्यास, पतला लसदार थूक 10. आच्छादित करना, छाया करने के निमित्त कोई वस्तु ऊपर तानना 11. संसद आदि के सदस्य निर्वाचित करने के लिए मत देने का अधिकार 14. मूषक 15. प्रभावोत्पादक, उपयोगी (उर्दू) 18. एक प्रकार का द्विदल अन्न जिसकी दाल बनाई जाती है 20. बहता हुआ 21. वह मसालेदार चपाती जो उड़द या मूंग की पिट्ठी से बनती है 22. विवश, लाचार (उर्दू)

ऊपर से नीचे
1. दंड योग्य कर्म, जुर्म, गुनाह 2. प्रासाद, राजाओं या धनिकों के रहने का स्थान (उर्दू) 3. प्यारा-दुलारा लड़का 4. बराबरी का अधिकार 5. टहनी 6. एक तरह का सोने का प्राचीन सिक्का (उर्दू) 10. छतरी 11. जिसकी महिमा अत्यधिक हो, राज्यपालादि के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द 12. कार्य, रचनेवाला 13. शरीर की नस या नाड़ी (उर्दू) 16. घर्षण करना, पीसना 17. अभी, इस समय (सं.) 19. कर्ण (सं.) 21. नदी समुद्र का सामने वाला दूसरा सिरा

Solution 12024

न	ज	र	बं	द	■	खं	भा
वा	त	■	धु	ला	ई	■	घां
सा	ला	ना	■	ली	■	म	त
■	ना	ला	■	■	ल	ह	र
स	■	य	क्ष	ना	य	क	■
म	ह	क	ना	■	■	ना	श
क	र	■	ना	पा	क	■	ह
क्ष	म	ता	■	ना	म	दा	र

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में बैचारिक अशांति रहेगी, सत्संग से मन आध्यात्मिक शांति का अनुभव होगा, संतोष बना रहेगा, व्यवसायिक तनाव रहेगा, वर्ष के मध्य में पारिवारिक चिन्ता का कारण रहेगा, वर्ष के अन्त में राजनैतिक मित्रों का सहयोग और मार्गदर्शन प्राप्त होगा, प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, नवीन योजनाओं का क्रियान्वयन होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों की नई योजनाओं का क्रियान्वयन होगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों का दाम्पत्य जीवन सुखमय शांतिपूर्ण रहेगा, मिथुनऔर कन्या राशि के व्यक्तियों को सामाजिक मित्रों के कार्यो में व्यस्तता रहेगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को राजनैतिक मित्र के सहयोग से पद परिवर्तन होगा, कर्क राशि के व्यक्तियोंको उत्तम सफलता मिलेगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों के लिये योजना साकार होगी, सिंह राशि के व्यक्तियों को निजी पुरूषार्थ का लाभ मिलेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक बुद्धिमान चतुर, भावुक, कल्पनाप्रिय, एवं व्यवहार कुशल, दार्शनिक, हंसमुख और मिलनसार होगा. व्यवसायिक कार्यो में उन्नति करेगा. कानूनी शिक्षा में इनकी रूचि रहती है. माता पिता को सुखी रखेगा. धार्मिक और भक्त होगा.

मेष- अनावश्यक विवादों से बचें. निजी दायित्वों की पूर्ति होगी. मानसिक प्रसन्नता रहेगी. आकस्मिक व्यस्तता रह सकती है.

वृषभ- किसी खास व्यक्ति से मुलाकात होगी. मानसिक संतोष रहेगा. लाभ में कमी आ सकती है. अपना व्यवहार संयमित रखें प्रवास का योग है.

मिथुन- संतान पक्ष में संतोष रहेगा. शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति होगी. व्यापार व्यवसाय अच्छा रहेगा. जल्दबाजी न करना ही हितकर और लाभकारी रहेगा.

कर्क- सामाजिक कार्यों में यश मिलेगा. कार्य की अधिकता रहेगी. यशा मिलेगा. नियमितता बनी रहेगी. परिश्रम अधिक करना पड़ेगा. लाभ होगा.

सिंह- स्वजनों का सहयोग रहेगा. नौकरी में वातावरण अनुकूल रहेगा. धार्मिक कार्य और पूजापाठ में रूचि रहेगी. नियोजित कामकाज बनने का योग है.

कन्या- धैर्य रखकर कार्य करना हितकर रहेगा. दैनिक जीवनचर्या में नियमितता रहेगी. पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी सिद्ध होगी. स्वजनों का ध्यान रखे.

तुला- उत्साह में वृद्धि होगी. व्यवसायिक प्रतिष्ठा बनी रहेगी. निजी कार्यो में व्यस्तता रहेगी. लाभ होगा. यश, मान सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त होगी.

वृश्चिक- धन, यश, कीर्ति में वृद्धि होगी. दूर दराज की यात्रा होगी. परिश्रम अधिक करना पड़ेगा. थकान महसूस कर सकते हैं. उदर विकार से कष्ट होगा.

धनु- अनचाही यात्रा का योग बनेगा. संबंधों में प्रगाढ़ता आयेगी. दायित्वों का निर्वहन होगा. अतिथि आगमन से व्यय बढ़ेगा. साहस बना रहेगा.

मकर- संतान आदि के कार्यो का निर्वहन होगा. महत्वपूर्ण काम बनेगा. रचनात्मक कार्यो की रूपरेखा पर विचार विमर्श हो सकता है. संयम रखें.

कुम्भ- शिक्षा प्रतियोगिता के क्षेत्र में चल रहे प्रयास सफल होंगे. किसी खास व्यक्ति से मुलाकात होगी. शुभ संदेश मिलेगा. परिश्रम अधिक होगा.

मीन- पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति होगी. मित्रता उपयोगी सिद्ध होगी. मानसिक प्रसन्नता रहेगी. आकस्मिक प्रवास का योग है. साहस संयम रखें.

उदयकालीन ग्रह चाल

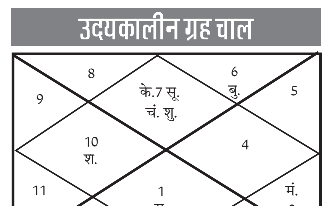

पंचांग

रा.मि. 27 संवत् 2082 आश्विन कृष्ण द्वादशी गुरूवासरे रात 12/16, पुष्य नक्षत्रे दिन 8/56, शिव योगे रात 12/32, कौलव करणे सू.उ. 5/56 सू.अ. 6/4, चन्द्रचार कर्क, पर्व-द्वादशी श्राद्ध, सन्यासी श्राद्ध, शु.रा. 4, 6,7,10,11,2 अ.रा. 5,8,9,12,1,3 शुभांक- 6,8,2.

व्यापार भविष्य

आश्विन कृष्ण द्वादशी को पुष्य नक्षत्र के प्रभाव से गुड़, खांड़, कपास, सन, सूत, पाट, बारदाना, खली, बिनौला, आदि के भाव में उतार चढ़ाव रहेगा. धनियां, सौंठ, अजवाईन, लालमिर्च, गरम मसाला, के भाव में तेजी होगी. भाग्यांक 4867 है.

SUDOKU 7157

		9		5		2		4
4	5				9	7	1	8
				7			5	3
	8	2	7		5			6
1	3			4			7	2
5			1		2	8	3	
8	4			9				
3	6	1	2				9	5
2		5		1		6		

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7156

7	8	6	4	1	3	5	9	2
5	9	4	7	8	2	1	6	3
1	2	3	6	9	5	7	4	8
9	3	8	2	6	1	4	7	5
2	7	5	8	4	9	6	3	1
6	4	1	5	3	7	2	8	9
3	5	9	1	7	4	8	2	6
8	1	7	9	2	6	3	5	4
4	6	2	3	5	8	9	1	7